Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-221-225

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 221-225

©2025 Gyanvividha

www.journal.gyanvividha.com

कमल कौर
शोधार्थी,
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला.

Corresponding Author :

कमल कौर
शोधार्थी,
पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला.

नाथ सम्प्रदाय में गोरखनाथ की विचारधारा

भारत की संत परम्परा के महत्त्वपूर्ण सम्प्रदायों में आध्यात्मिक और योगिओं का एक महत्त्वपूर्ण संप्रदाय रहा है- नाथ सम्प्रदाय। प्रत्येक सम्प्रदाय किसी न किसी अपने पूर्व सम्प्रदाय की विचारधाराओं से कहीं न कहीं प्रभावित होता है। वही विचारधारा उस समय के वातावरण में परिस्थितियों के अनुसार चलती है और समय के चलते एक नवीन विचारधारा लेकर समाज के समक्ष उपस्थित होती है। इसी तरह बौद्ध धर्म में बौद्ध धर्म की दो शाखाएं महायान और वज्रयान रही है और वज्रयान शाखा का सहजयान से नाथ संप्रदाय का उद्भव हुआ।

नाथ सम्प्रदाय केवल योग एवं साधना तक ही सीमित नहीं था बल्कि यह ज्ञान, भक्ति, योग, समाज-सुधार, आध्यात्मिक स्वतंत्रता और सभी वर्ग में समानता लाने का संदेश देता रहा है। नाथ संप्रदाय की वैचारिक पृष्ठभूमि भारतीय तंत्र शैव, बौद्ध, वेदांत और भक्ति परंपराओं का समन्वय है। जिससे यह एक समावेशी और प्रभावशाली परंपरा बन गई, जिसका आम लोगों पर इनका विशेष प्रभाव पड़ा है इनके प्रमुख नाथ गोरखनाथ को माना जाता है और यह मत्स्येन्द्र नाथ के शिष्य हैं। यह संप्रदाय हठयोग, अद्वैत, निर्गुण भक्ति और सामाजिक समस्या को कम करने पर बल देता है। हठयोग को आगे ले जाने में नाथ योगियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। सिद्धों की वाममार्गी योग साधना की प्रतिक्रिया में आदिकाल में नाथपंथियों की हठयोग साधना का आरंभ हुआ है। इस पंथ को चलाने वाले प्रमुख नाथ मत्स्येंद्रनाथ, गोरखनाथ माने जाते हैं। नाथों की संख्या नौ मानी गई है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार 'गौरक्षसिद्धांतसंग्रह' में प्रवर्तकों के नाम गिनाए हैं- 'नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चंद्र, सत्यनाथ, भीमनाथ, गोरक्षनाथ, चर्पटनाथ, जालंधर और मलयार्जुन'।[1]

डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार- "नाथपंथ या नाथ-सम्प्रदाय के सिद्धमत,

सिद्धमार्ग, योग-मार्ग, योग-सम्प्रदाय अवधूत मत एवं अवधूत-संप्रदाय नाम भी प्रसिद्ध है"[2]।

यह परिभाषा नाथ व सिद्ध को एक ही संप्रदाय का नहीं मानती, परंतु दोनों मार्गों को एक ही नाम से जाना जाता था। नाथ संप्रदाय से पहले भी अनेक संप्रदाय रहे हैं गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरु महिमा, इंद्रिय-निग्रह, प्राण-साधना, वैराग्य, मनःसाधना, कुंडलिनी- जागरण, शून्य समाधि आदि का वर्णन मिलता है।[3] **हठयोग** का इसमें विशेष महत्त्व रहा है। गोरखनाथ ने हठयोग का उपदेश दिया। हठयोगियों के 'सिद्ध-सिद्धांत पध्दति' ग्रंथ के अनुसार 'ह' का अर्थ है- सूर्य तथा 'ठ' अर्थ है- चंद्र। इन दोनों के योग को हठयोग कहते हैं।[4] गोरखनाथ ने हिंदू मुसलमान दोनों के लिए ही द्वारा खोले थे। हठयोग के द्वारा वह ईश्वर की ओर लेकर जाना चाहते थे। इस पर शुक्ल कहते हैं-

"गोरखनाथ की हठयोगी साधना ईश्वरवाद को लेकर चली थी अंतः उसमें मुसलमानों के लिए भी आकर्षण था। ईश्वर से मिलाने वाला योग हिंदुओं और मुसलमानों दोनों के लिए एक सामान्य साधना के रूप में आगे रखा जा सकता है, यह बात गोरखनाथ को दिखाई पड़ी थी।"[5]

नाथ अपने नाम के पीछे नाथ अवश्य लगाते थे नाथ का अर्थ इस प्रकार है- डॉ. हरदेव बाहरी के हिंदी शब्दकोश के अनुसार- "नाथ शब्द का अर्थ है- स्वामी, प्रभु, अधिपति, मालिक, स्त्री का पति, गोरखपंथी संप्रदाय, इन साधुओं के नाम के अंत में लगने वाली उपाधि (जैसे मत्स्येंन्द्रनाथ) पंथ कनफटे योगियों का मत, नाथ पंथ का अनुयायी।"[6]

नाथों ने अपनी वाणी द्वारा लोगों को अपने विचारों से अवगत करवाया। गोरखनाथ की वाणी में लोक कल्याण की विचारधारा का समावेश रहा है जो इस प्रकार है-

गुरु को महत्त्व- नाथों ने गुरु को विशेष महत्त्व दिया उनका मानना है कि गुरु ही ऐसा मार्गदर्शक है जो हमारी बाधाओं को दूर कर हमारे जीवन को उज्ज्वल बनाता है और जीवन के अंधकार को दीपक बन कर दूर करता है। अपने शिष्य को मोह माया से दूर कर मार्गदर्शन करता है, जिसे भक्ति का मार्ग सरल सुगम हो जाता है। उसके लिए गुरु का होना परम आवश्यक है इस पर विचार करते नाथ कहते हैं-

"गुरु कीजै गहिला निगुण न रहिला।
गुरु बिनं ग्यांन न पाईला रे भाईला।।"[7]

और गुरु गोरखनाथ जी कहते हैं कि आकाश मंडल में एक अमृत रूपी औंधे मुंह वाला कुआं है। जिसमें से वही शिष्य अमृत पी सकता है जिसने अच्छे गुरु की शरण ली है या अच्छे गुरु को धारण किया है। क्योंकि उसे अमृत रूपी जल को पीने के उपाय सिर्फ गुरु को ही पता है। जिसका गुरु अच्छा है वही अमृत का पान कर सकता है जिसने अच्छा गुरु धारण नहीं किया वह ऐसे ही रह जाता है-

"गगन मंडल में ऊधा कूबा तँहा अमृत का बास।
सगुरा हीइ सुभरि पीवै निगुरा जाइ पियासा।।"[8]

इस तरह नाथ जी ने गुरु की महत्ता को प्रकट किया है और शिष्य की जिंदगी में गुरु को अहम माना है।

मन की शुद्धता पर बल- नाथों का मानना है की मन की शुद्धता तन की शुद्धता से अधिक महत्त्वपूर्ण है। शुद्ध मन को तीर्थों पर भटकने की जरूरत नहीं है, क्योंकि पंथ चलाने अर्थात् मन में साधकता को साधना जरुरी है। इसे नाद बिंदु और वायु की साधना भी शिथिल पड़ जाती है और जब मन साफ हो तो संपूर्ण तीर्थ स्थल घट अर्थात् शरीर के भीतर ही है। अब वह भला कहीं और क्यों जाऐगा और वह भ्रम में क्यों पड़ेगा। इस पर गुरु गोरखनाथ कहते हैं-

"पंथि चलै चलि पवनां तूटै नाद बिंद अरु बाई।
घट ही भीतरि अठसठ तीरथ कहाँ भ्रमै रे भाई।।"[9]

और यदि मन चंगा है तो कठौती में ही गंगा है कहीं बाहर जाने की अवश्यकता नहीं

"अबधू मन चंगा तो कठौती ही गंगा।
बांध्या मेल्हा है तो जगत्र चेला।।"[10]

मध्यमार्ग का उपदेश- गुरु मध्यमार्ग का उपदेश देते कहते हैं कि किसी खाने की वस्तु के लालच के कारण

खाने पर पागलों की तरह टूट मत पड़ना और बिना खाए भी मत रहना। दिन रात ब्रह्मा अग्नि के रहस्य का चिंतन करना किसी बात पर हठी लोगों की तरह अडिग न रहना और एकदम निकम्मा भी न हो जाना। ऐसे में गोरखनाथ कहते हैं-

“धाये न पाइबा भूषे न मारिवा,
अहनिसी लेबा ब्रह्मा अग्नि का भेवं।
हठ न करिवा पड़्या न रहिवा,
यू बोल्या गोरष देवं।।”[11]

गृहस्थ दृष्टिकोण- नाथ संप्रदाय के योगी गृहस्थ जीवन के जाल में फंसे मनुष्य को दयनीय जीव मानते हैं उनका मानना था कि क्रोध, काम का मूल कारण गृह ही होता है। एक बार जो गृह परिवार के बंधन में बंध गया वह ज्ञान से दूर हो जाता है। वह ज्ञान की बातों का अधिकारी नहीं रह पाता। गृहस्थ का ज्ञान, नशेबाज का ध्यान, बूचे का कान, वैश्या का मन और बैरागी का माया बटोरना उनके समान ही निरर्थक है। इसके बारे में नाथ कहते हैं-

“गिरही को ग्यांन, अमली को ध्यान,
बूचा को कान, वेस्या को मान,
बैरागी अर माया स्यूं हाथ,
या पाँचाँ को एकै को साथ।।”[12]

मांस, मंदिरा और निंदा का विरोध- इन्होंने मांस, मंदिरा और निंदा का डटकर विरोध किया है नाथ सिद्धों की तुलना में नैतिकता पर बल देते हैं यह सब वस्तुएं मानव को नर्क का अधिकारी बनती है ऐसे में मंदिरा, मांस और निंदा तीनों का त्याग करके जीवन को नरक की अग्नि से बचाया जा सकता है। इसी कारण वह मंदिरा, मांस और निंदा का विरोध करते हुए कहते है-

“जोगी हुड़ पर निंदया झषै।
मद् मांस अरु भांगि भषै।
इकोतरसै पुरिषा नरकहिं जाई।
सति सति भाषंत श्री गोरष राई।”[13]

यह सब मनुष्य को परम आंनद से दूर करती है दया और धर्म का नाश करती है -

“अबधू मांस भषंत दया धरव का नाश।
मद पीवत तहां प्रांण निरास।।
भंगी भषंत ग्यांन ध्यांन षोवंत।
जम दरबारी ते प्रांणी रेवंत।।”[14]

नाद और बिंदु की संयमता पर बल- गोरखनाथ विशुध्द ब्रह्मचारी को ही साधना के लिए उचित मानते हैं क्योंकि अच्छी साधना द्वारा ही अकिंचन शरीर को सिद्ध योग्य बनाया जा सकता है अगर नाद और बिंदु में संयमित रखा जाए तो मनुष्य सिद्धि प्राप्त करने में समर्थ है और केवल नाद बिंदु का नाम जपते रहने से भी काम नहीं चलता सिद्धि प्राप्त करना तो उचित साधन का विषय है। इस विषय में नाथ कहते हैं-

“नाद नाद सब कोइ कहै,
नादहि ले को बिरला रहै।।
नाद बिंद है फिकी सिक्षा
जिहिं सांध्या ते सीधैं मिला।।”[15]

और गोरखनाथ जी विशुद्ध विचार वाले ब्रह्मचारी को ही इस मार्ग के लिए श्रेष्ठ मानते हैं और नाद व बिंदु दोनों में संयमित रखने की बात कहते हैं।

धैर्य से साधना सफल- योगी कहते हैं की सिध्दि जल्दबाजी का काम नहीं है। सोच समझकर ही बोलना चाहिए पूरे ध्यान से कदम से कदम चलना चाहिए गलती की कोई संभावना नहीं होनी चाहिए। धैर्य रखते हुए हर कार्य करना चाहिए और अपनी साधना पर गर्व भी नहीं करना चाहिए। एक योगी का व्यवहार सहज होना चाहिए धैर्य उसकी सबसे बड़ी साधना है-

“इबकी न बोलिबा ठबकि न चलिबा
धीरै-धरिबा पावं।
गंरब न करिबा सहज रहिबा
भणत और रावं।”[16]

सर्वव्यापी ब्रह्मा- परमात्मा, ब्रह्मा सर्वत्र विद्यमान माना है। ब्रह्मा प्रत्येक घट में विद्यमान है किसी के शरीर में वह विश्राम कर रहा है किसी के शरीर में जाग रहा है शरीर ब्रह्मा के बिना नहीं है वह तो सब जगह व्याप्त है। इसके बारे में नाथ कहते हैं-

"घटि घटि गोरष फिरे निरुपा।
को घट जागे को घट सूता।
घटि घटि गोरष घटि घटि मीनं।
आपा परचै गु मुषि चीन्ह।।"[17]

इस तरह घट घट में गोरख है घट घट में मत्स्येंद्रनाथ।

शैवमत समर्थक- नाथों ने शिव की उपासना पर बल दिया है और शिव को ही आदि नाथ कहते हैं। उनका मानना है कि शिव की इच्छा शक्ति से समस्त जगत की सृष्टि होती है और उसी में सारा संसार समाहित है। उनका मानना है कि शक्ति ही जगत का कारण है और शिव ही शक्ति है 'नाथ संप्रदाय' पुस्तक में कहा गया है कि शिव और शक्ति ये दो तत्त्व उत्पन्न होते हैं। परम शिव निर्गुण और निरंजन है। शिव का धर्म ही शक्ति है। धर्मी और धर्म अलग-अलग नहीं रह सकते। इसलिए मत्स्येंद्रनाथ ने कहा की शक्ति के बिना शिव नहीं होता और शिव के बिना शक्ति नहीं रह सकती।

ज्ञान पर अहंकार नहीं- गुरु जी कहते हैं कि अपने ज्ञान पर कभी घमंड नहीं करना चाहिए। सभी के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। हर बात को सोच समझकर करना चाहिए। हर कदम धीरे-धीरे रखते गर्व से मुक्त होकर सहज स्वाभाविक स्थिति में रहना चाहिए। जिन्हें वास्तव में ज्ञान होता है वह ज्ञान का दिखावा नहीं करते और जिन्हें न मात्र ज्ञान होता है, वही ज्यादा उछलते चलते हैं। ज्ञान बांटते दिखाई पड़ते है। जब सिद्ध सिद्ध मिलते हैं तब वार्तालाप संभव है उसी से लाभ होता है। पूर्व ज्ञान वाला मनुष्य नहीं अधूरे ज्ञान वाला अधिक उछलता है और मनुष्य को काम क्रोध अंहकार से मुक्ति पानी चाहिए। इस विषय में गुरु गोरखनाथ कहते हैं-

"भरया ते थीरं झलझलंति आधा।
सीधें सिध मिल्या रे अबधू अरु लाघा।।
नाथ कंहै तुम सुनहु रे अवधू
दिढ करि राषहु चीया।
काम क्रोध अहंकार निबारौ
तो सबै दिंसतर कीया।।"[18]

बाहरी आडंबरों का विरोध-नाथों का मानना है कि बाहरी आडंबरों पाखंडों को त्याग करके मनुष्य को परमात्मा के लिए सही मार्ग का चयन करना चाहिए। न की दिखावा मात्र के लिए पूजा पाठ करनी चाहिए। उनका मानना है की तीर्थ यात्रा करने से कोई लाभ नहीं होता उसे कोई फल नहीं मिलता। जब तक मन साफ ना हो वहां गंगा जल से स्नान करने पर भी मन की गंदगी साफ नहीं होती। तीर्थ यात्राओँ ने सन्यासियों को भ्रम में डाल रखा है। इसे अच्छा तो साधुओं की सत्संग में उपदेशों को सुन लेना बेहतर है। दिखावे से बाहर आकर ही तपस्या कर परमात्मा को पाया जा सकता है। जब घर अधर का परिचय हो जाता है, तो कुंडलिनी शक्ति का सहस्त्रारस्थ शिव से परिचय हो जाता है। तब साधक के लिए अनुभव ज्ञान से बाहर कुछ नहीं रह जाता।

"देवल यात्रा सुंनी जात्रा, तीरथ जात्रा पांणी।
अतीत जात्रा सुफल जात्रा बोलै अमृत वाणीं।
अधरा धरे बिचारिया, घर या ही मैं सोई।
घर अधर परचा हूवा, तब उती नाहीं कोई।।"[19]

इस तरह देवालय की यात्रा शून्य यात्रा है उसे कोई लाभ नहीं होता केवल पाखंड मात्र है। इससे अच्छा साधुओं की अमृतवाणी को ग्रहण कीजिए जिससे लाभ होगा।

योग साधना पर बल- भिक्षा में जो प्राप्त हो वह भी गुरु का ही है वह उन्हीं को ही समर्पित है। भिक्षा में मिले अन्न का कभी निरादर नहीं करना चाहिए और जो योग साधना नहीं करते उन पर भी प्रहार किया है, उन्हें ऐसी शिक्षा देने वाला अच्छा गुरु नहीं मिला है। वह अपनी शरीर की चर्बी से मुक्त नहीं हो पा रहे उनकी ब्रह्मा से भेंट भला कैसे हो सकती है जो मनुष्य साधना करता है उसकी आंखें निर्मल होती है। शरीर चर्बी के बोझ से मुक्त होता है, उसे किसी तरह का रोग नहीं लगता है।

"बड़े बड़े कूले मोटे-मोटे पेट,
नहीं रै पूता गुरु सौ भेट।
षड़ षड काया निरमल नेत,
भई रे पूता गुरु सौ भेट।।"

निरति ने सुरती जोगं ने भोग,
जुरा मरण नहीं तहां रोग।
गोरस बोलै एकंकार,
नहि तहँ बाचा ओअंकार।।”[20]

इस प्रकार गोरखनाथ जी नाथ संप्रदाय की महान धार्मिक नेता रहे हैं। उनका व्यक्तित्व व्यापक निराला और कुशाग्र बुद्धि के स्वामी जान पड़ते हैं। जिस समय भारतीय समाज में छुआछूत, भेदभाव, धार्मिक कर्मकांडों के कारण आपसी टक्कर थी उनको मध्य नजर रखते हुए उन्होंने अपनी विचारधारा द्वारा छोटे-बड़े सबके लिए द्वार खोल दिए। विचारों का प्रचार करते हुए पाखंड, बाहरी आडंबरों का उन्होंने अपनी तीखी वाणी द्वारा उनको कुचल डाला। वे भक्ति और ज्ञान के उपासक थे तथा साधना के मार्ग को महत्त्व, गुरु को महत्त्व देते हुए शिष्य को भी विशेष स्थान देते हैं। अश्लीलता का विरोध कर आंतरिक शुद्धता पर बल देते है। मानसिक पवित्रता, मन की पवित्रता, मांस मंदिरा से दूर रहकर मन की शुद्धता प्रबल होती है और शरीर के स्वास्थ्य के लिए भोजन के आदरपूर्वक ढंग से ग्रहण करने पर जोर देते हैं जो वर्तमान समय की भी जरूरत है। वर्ग विभेद को हटाकर उन्होंने समानता लानी चाही है। नाथ संप्रदाय की गृहस्थ जीवन के प्रति जो अनादर भाव रहा है। यह इस संप्रदाय को थोड़ा शुष्क दृष्टिकोण प्रदान करता है। परंतु बाकि सब अच्छाईयों को भुलाया नहीं जा सकता जो इन्हीं के कारण आगे आने वाले साधु संतों के लिए विचारों की जो भूमि तैयार हुई है। वह सराहनीय है इनके विचारों में धार्मिक आंदोलन ही नहीं बल्कि सामाजिक क्रांति का स्वर भी सुनाई पड़ता है जिसने भारतीय संत परम्परा को गहराई से प्रभावित किया है। गोरखनाथ व अन्य योगियों ने सहज, सरल भाषा में भक्ति एवं योग का प्रचार प्रसार किया है। जो कभी भुलाया नहीं जा सकता और हिन्दी साहित्य में नाथ सम्प्रदाय का स्थान अविस्मरणीय रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल,पृष्ठ 9.
2. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ.नगेंन्द्र, पृष्ठ 62.
3. वही, पृष्ठ 63.
4. नाथ संप्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 135.
5. हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, पृष्ठ 9.
6. हिन्दी शब्दकोश, डॉ. हरदेव बाहरी, पृष्ठ 435.
7. नाथ संप्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 183.
8. गोरख-बानी (सबदी), डॉ. पीताम्बर बड़थ्वाल, पृष्ठ 9.
9. नाथ संप्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 183.
10. वही, पृष्ठ 183.
11. वही, पृष्ठ 185.
12. वही, पृष्ठ 185.
13. गोरख-बानी (सबदी), डॉ. पीताम्बर बड़थ्वाल, पृष्ठ 56.
14. नाथ संप्रदाय, हजारी प्रसाद द्विवेदी, पृष्ठ 187.
15. वही पृष्ठ 186.
16. वही, पृष्ठ 184.
17. गोरख-बानी (सबदी), डॉ. पीताम्बर बड़थ्वाल, पृष्ठ 15.
18. वही, पृष्ठ 11.
19. वही, पृष्ठ 34.
20. वही, पृष्ठ 38.